चिड़िया आकर बैठ गई तो कपड़ा नजिस हो जाता क्योंकि कौवे की चोंच और चिड़िया के पन्जे आपके क़ाबू में नहीं हैं जो आप उनको नजिस जगह जाने से रोकते फिरें । ऐसे में उन पर तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता मगर आपकी ज़िन्दगी अजीरन हो जाती । लेकिन शरीयत का ये हुक्म होने यानी उनकी नजासत उसी वक़्त तक है जबकि उनके जिस्म पर नजासत लगी है । जैसे ही नजासत दूर हुई वह पाक हैं, इससे बड़ी आसानी पैदा हो गयी । अब अगर देख लिया कि उसकी चोच, पन्जे हाथ या मुॅह में कोई नजासत लगी हुई है तब तो बेशक आपको उसे नजिस समझना पड़ेगा । ये उस जानवर के जिस्म की नजासत नहीं होगी बल्कि उस असली नजासत का नतीजा होगा जो उसमें लगी हुई है लेकिन अगर कोई नजासत लगी हुई नजर नहीं आती तो कोई वजह नहीं कि आप उसको नजिस समझें । (यानी अब आप उसे नजिस न समझें)। ....जारी ✦✦✦

नाते रसूल

नदल हिन्दी

दयारे करम है दयारे मोहम्मद
है रश्के जिनां खुद जवारे मोहम्मद
जिसे कहते हैं रौनक़े बाग़े आलम
समझ लो यही है बहारे मोहम्मद
खुदा की खुदाई है मोहताज इनकी
ये है कम से कम इख़्तियारे मोहम्मद
कहा रजअते शम्सो शक़्क़े क़मर नें
जहां में है बस इक़्तेदारे मोहम्मद
बलन्दी-ए-किरदार की हद नहीं है
है काफ़िर को भी ऐतेबारे मोहम्मद
मलाएक निगाहें बिछाए हुए हैं
है मेराज में इन्तेज़ारे मोहम्मद
उठी गर्दे पा और पंहुची फ़लक पर
बलन्द आस्तां है ग़ुबारे मोहम्मद
सवारी बना है रसूलों का आक़ा
हैं दोनों नवासे सवारे मोहम्मद
मुसीबत में जो काम आया नबी के
उसी को कहुंगी मैं यारे मोहम्मद
है सीने में जिसके उलूमे पयम्बर
उसी को कहो राज़दारे मोहम्मद
जिसे देखकर उठ खड़े हों पयम्बर
वही है यक़ीनन वक़ारे मोहम्मद
मेहारे ज़माना है दस्ते नबी में
है हाथों में किसके मेहारे मोहम्मद
वो ताजे वेलायत नबी ने पिन्हाया
वो मौला बना ताजदारे मोहम्मद
पयम्बर लिए हैं जिन्हें ज़ेरे चादर
वही हैं वही इफ्तेख़ारे मोहम्मद
वसीये नबी जो मिनल्लाह होगा
करेगा वही शख़्स कारे मोहम्मद
नबी अपने हैं ज़िम्मादारे खुदाई
खुदा अपना है ज़िम्मादारे मोहम्मद
अलीये वली और हसनैने आली
यही चन्द तन हैं क़रारे मोहम्मद
जिसे कहते हैं फ़ातेमा बिन्ते अहमद
वो है नाज़िशो इफ्तेख़ारे मोहम्मद
जिसे देखकर गुल को आये पसीना
वो है गेसुए मिश्क़ बारे मोहम्मद
पसे गर्दे हिज़्बे पयम्बर नदा चल
जिनां जा रहा है ग़ोबारे मोहम्मद

✦✦✦

मदहे इमाम जाफरे सादिक़ अ. स.

वसीये मुरसले आज़म हैं हज़रत जाफ़रे सादिक़
तभी तो करते हैं कारे रिसालत जाफ़रे सादिक़
है वाजिब आपकी लारैब मिदहत जाफ़रे सादिक़
मगन है चूंकि दरियाए तबीअत जाफरे सादिक़
इन्हें हाजत नहीं दुनिया की, बस अल्लाह काफ़ी है
मगर है सारे आलम की ज़रूरत जाफ़रे सादिक़
न क्यों तालीम दें इल्मे पयम्बर की ज़माने को
हैं बेशक वारिसे इल्मे नुबूवत जाफ़रे सादिक़
ज़माना इस क़दर रौशन तुम्हारे इल्म ही से है
तुम्हीं हो फख़्रे अरबाबे बसीरत जाफरे सादिक़

✦✦✦